अन्धेरे से हरे होते पेड़

(कविताएं)



राजस्थान साहित्य अकादमी,
उदयपुर के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

अन्धेरे से हरे होते पेड़

भूपेन्द्र कुमार अग्रवाल

स्वस्ति साहित्य सदन

भूपेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रथम सस्करण 1990 / प्रकाशक स्वस्ति साहित्य सदन, रानी बाज़ार,
बीकानेर 334001 / आवरण स्वामी अमित / मूल्य पतीस रुपये मात्र/
मुद्रक एस० एन० प्रिंटस नवीन शाहदरा दिल्ली 110032

ANDHERE SE HARE HOTE PED (Poetry)
by Bhupendra Kumar Agarwal

Price Rs 35 00

क्रम

छाया

छाया
तैरी
हलके हलके
फैल गई
सागर तल पर
पक्षी
मौन था
बहता ।

घोसला

घोसला
ताकती है
चील
उजडे पेड पर
बैठी।

एक बार फिर

एक बार फिर
पत्ता चटका
अगुलिया चटकी
रुका
डाली के मोड पर
दिशा टटोली
ताकने लगा
दूर चेहरा
देखा ?
उस गोल आख के मोड पर
अब भी
ठहरा है
पत्ता
इन्तजार मे।

सहमी है

सहमी है
आवाज
भाग-दौड है
स्वर मे।

पहले मै

पहले मैं
फिर अपने
सपने
कहने की बात,
टूट गये।

चमकती

चमकती
दरार से चादनी
तेल की परत-सा
शब्द तैरता
      फैलता

या तो अधेरा
या फिर
परत का रग।

निश्चल हो आता
गहरे और गहरे
रीतता
भरा भरा ?

आओ परछाई

आओ परछाईं
उजाले को पहचाना जाये
फैले
पावो का बिम्ब
सर
क्षितिज तक।

किसी ने नहीं पूछा

किसी ने नही पूछा
क्यो बैठे हो यहा
कब से
किसके लिए,

कमर
सूरज के रास्ते की तरह
क्यो झुकी है रात गये
किसी ने नही पूछा ।
मैं ही चाहता रहा कहना
यू ही तो नही बैठ जाता कोई
स्वप्न ही आया भयावह
और आख
तडप गई दिन पाने
रात गये
किसी ने नही पूछा
न ही रहा जाता
कहे को दबाए ।

होकर घुटन से मुक्त

होकर घुटन से मुक्त
चीर उमस की देह
दिशा के बैर बन्धन तोड
आती हवा
गुनगुनाता पेड
टहनिया बरबस उलझ कर बाह् से
खिल-खिल मिला कर
रोम मे सिहरन
झुकाती जा रही
धीरे धीरे
हरा है पेड
हरा वातावरण का ताप
झुकी है शाख सारी
उगी है पेड मे
कोपल वह् पहली
गर्वीली शिखर सी ।

रेत के टीले,
ताप के तूफान
सागर आकाश से
गिरता रहा प्रतिवर्ष अचूका
पेड
शून्य मे बढता शिखर के साथ ।

अब कोई जल्दी नहीं

अब कोई जल्दी नही
कोई बेचैनी नही
सभी कुछ सिमट आया है आस-पास
पुतली छत की तरफ ताके
सोच रही है।

गाल आपस मे चिपके
नाक छज्जा बनी छाई है मुह पर
आखे
करीब आ गई बाहर
चेहरा ही रहा है शेष
नाच करते
गदन लटकी है देह पर
उसी मे बैठ जाता है पजा
टाक लेता है गदन
लटक जाती हे टागे

शब्द मृत चेहरे के
बदलते है भाव
वह बार बार
हाथ जोड, गदन झुकाती है
करती है

खेल
टूटी टांग को छिपाने को
दिखाए एक तरफ का पंख
पुतली
एक पांव की चिड़िया बनकर
दिखाएगी चलकर
उड़ जायेगी आकाश में।

पुतली दिखाती है खेल
देखते हैं हम
देखते हैं सब
बजाते हैं तालियां
डगमाते हैं
घूरते हैं आकाश की तरफ बार बार
खेल
पुतली को कोई जल्दी नहीं
कोई बेचैनी नहीं।

दूर दिखते हैं पेड

दूर दिखते हैं पेड
अपने जैसे सर
हिलते हुए
जरूरी नहीं
बाटना सबमें
चेहरे
अपने।

फिर फिर आती है हवा

फिर फिर आती है हवा
जहरीले गम जगत मे
एक जंगी होती है आवाज
कांपते हैं पेड़
उड़ते हैं पत्ते
घटती है घटना वही की वही
रोशनी
बढ़ती है अंधेरे की तरफ।

लोहे की चौखट

लोहे की चौखट
चार लोहे के पैर
बीच के खाली घर मे
पेंच कसे तख्तो पर
दो तकियो के बीच
सोता है बच्चा
तकिये ?
सर विहीन
पडे है उदास।

नन्ही हथेलियां

नन्ही हथेलियां
पकडती है मिट्टी
डालती है सूखी नदी मे
बहाव
हथेलियो के छोटे आकार
बडी योजना।

बनता है बाध
भरती है नदी
बहता है पानी
नदी के बाहर बहती है रेत
होता है शोर
चीखते हैं बच्चे
निश्वसन धरती की गोद मे।

यह वो जगह है

यह वो जगह है
जो खडी है खम्भो पर
यह वो छत है
जिसके उपर की छत पर
मैं
टहलता हू, कूदता हू, ताकता हू
उस छत को
जो मेरे छूने की सीमा मे है
पर मैं छूता नही
कहू ! छू नही पाता
करता हू अनुमान
उसकी ऊचाई का
मुझसे
पाव के अगूठे से।

सीने तक खड़ी है दीवार

सीने तक खड़ी है दीवार
शेष खंभे एक
ऊंचाई तक
छत को थामे
बीच दालान में रहता है
पलंग
सर्दी, गर्मी, धूप, छांह
यानि कि
सदा ही रहता है खाली
अस्त व्यस्त
बिछावन के स्वप्न ही
भरे रहते है दालान।

हम

हम
लैम्प की रोशनी के दोनों तरफ
बैठे है
दोनो की नजरे
उस पीले धब्बे पर टिकी है

मेज के नीचे
हमारे हाथ घुटनो पर पड़े है
सभी दरवाजे बन्द है

होती है दस्तक
हमारे अभ्यस्त हाथ
बुझा देते है लैम्प
छू भी जाते हैं आपस मे

दरवाजे की तरफ
उसने भी देखा होगा
उदास मुस्कुराहट से।

दूर अन्धेरे मे खोये पख

दूर अन्धेरे मे खोये पख
चलते हैं
धरती की तरफ

तपते लोहे के कुण्ड मे
लगकर दीवारो से
झुलसते पख
टूटती उडान
छटपटाकर राख के ढेर मे
खोजती है
देह
रोशनी की चाह पर

एक खूटा

एक खूटा
एक दूरी की रस्सी
एक सडक किनारे से किनारे तक
सुबह शाम
घिसती है पाव

रोज टकराती है आखें
सडक के किनारो से
बढते पाव
छूटते निशान
किनारे किनारे घिसते लौटते है
खूटे के चारो तरफ

इतना परिचित है रास्ता
कि याद ही नही
परिचय के क्षण ।

पगडण्डिया

पगडण्डिया
वे कच्चे रास्ते सुहाने, गुदगुदे
बीहड मे इठलाते, लहराते
पेडो को छूते
कभी तो रहे होगे यहा।
गिरते ही होगे
मीझर-पत्ते चिडियो के पख
बचते ही होगे तेज ताप से
राही
जाने
कब हो गये ठोस स्याह
बीहड से बदरग रास्ते।

सब कुछ तो पहले ही था मौन

सब कुछ तो पहले ही था मौन
देह भर ही तो आई थी

वह भी मौन
फिर नमन
फिर आसन
केवल
शान्त सुलगती धूप
एक धार-सी
उठती जाती थी सुगन्ध।

केवल चादनी ही नहीं

केवल चादनी ही नही
सागर भी
तोडता है सीमा
समाने
लीलती है वह भी।

हम

हम
कमरे मे बैठे है ।

मैंने

उससे पूछा
कमरे के कोने मे सीलन देखी
ईट की कोरो को भुरते
बढती दरार को
क्या यह सब तुमने देखा है ?

उसकी आखो मे
हरा पेड था
ठहरा हुआ ।

शात शात

शान्त, शान्त
सुबह का समय
खेतो की तरफ भागते
ठण्डी हवा के अन्तिम झोके
आखो मे स्वप्न
अधेरे से हरे होते पेड
लीक पर फिर निकल आया सूय ।

उसका आना

उसका आना
बन्द कोठरी मे दबे बैठे मुझको
आवाजें देना
दरवाजे बनाना
हिला हिला कर खिडकिया कहना
पहचानो
बार बार पहचानो
जितने गहरे से
उठ आया कहने
कुछ सुना ।

पहचानी सी हो गई है गध

पहचानी सी हो गई है गध
दूसरो के खार मे डूबा
हर सामान
जो मुझमे रहता है बन्द
चन्द क्षणो मे
चेहरे तक उभर आती है
उसकी छाप ।

ठहरे हाथ की अगुलिया

ठहरे हाथ की अगुलिया
अपनी देखरेख मे
निशान छोडने का
कहा करती है साहस

कितनी स्मृति
कितने दश्य उभर कर
टुकडे होकर भाग जाते है।

हाथ की नोक
मीनार-सी खडी रहती है
नमक की क्यारियो की परत पर।

हिले हाथ, बने निशान
उभरे कोई दृश्य साफ
क्यारी के टुकडो पर।

आओ

आओ
आ ही गये हो भीतर मेरे
तब मैं ही क्यों करदूं इनकार
देने द्वार
कि ठहर जाओ कहीं बीच
और रह जाये मेरा
सागर तक का मार्ग अधूरा

पहचानूं वह राह
मुझे जो पहुंचाती हो नित्य राग तक।

हथेली पर पेड की छाया

हथेली पर पेड की छाया
चौंका कर
तोडती है स्वप्न

चादनी मे लिपटे स्वप्न
दूर तक लहराते है आकाश मे

अचानक !
कितना गुदगुदाता है
निस्सग धरती की तरफ खिचना ।

कबूतर

कबूतर
जो आ बैठा है
इस सूखे पेड पर
खुजला-खुजला कर
अपने पख
नोच रहा है
एक एक कर।

राह पर पाव की टकार

राह पर पाव की टकार
गूजी आकाश तक
इन्तजार मे खडी रही
आया हो मोड।

आकाश
गरजता रहा
राह भौचकी रही
आ गया हो मोड।

टकार,
गरज
मिले, भागते देखे
अपना मोड।

घर कमरा और सारे पुराने को

घर, कमरा और सारे पुराने को
सिरे-से
माज-पोछ
बदल कर सारे क्रम
पहनाया लिबास नया
पाया मुझ को
वही का वही
केवल दोहराते अब तक।

उनकी अपनी जमीन

उनकी अपनी जमीन
अपना लिबास
अपने पक्षी
अपनी चहक
अपने रिश्ते
और एक ससार अपनो भरा।
एक हम ही नही है पेड
इस जगल मे।

जितना भी मौसम साधे सास

जितना भी मौसम साधे सास
पत्ती सिहर जाती है
जितना भी तना हो जाये कठोर
मौसम से सिहरी पत्ती
धडक कर कह जाती है
जाना ?
जाना !

आकाश बदलता रहे रग

आकाश बदलता रहे रग
उठती रहे हवा
सागर घेर ही लेता है धरती
और पूर्वा के तकादे
बजा-बजा कर दरवाजे
चौंकाते है
मानो प्यार मे कोई बात
रह गई हो अधूरी ।

मौसम मे अब भी

मौसम मे अब भी
पक्षी गाते है तिनका चुनते
पेड लहराते हैं नगी जडो पर
वह मिट्टी, वे जडे
और वह सम्बन्धो की मौत
कभी हुआ करती थी रिश्ते का दद
हुआ करती होगी अब तो
रिश्ता हो गया
सामान का खोना
कि टूटना कीमती फानूस का
कि सूख जाना पालतू पशु का
कि हो जाना खाली ऐसे कमरे का
जिसमे जाना, भर जाना
दहशत से । याद आते चेहरे ।
मौसम अब भी आते है
पक्षी गाते है ।

खडा हो जाता है सामने

खडा हो जाता है सामने
करने अपना बकाया हिसाब।

मुझे लगता है
रहना ही चाहिए बकाया हर समय
होता रहना चाहिए तकाजा
लगता रहना चाहिए कि अब तक रह गया है
शेष
मुझसे मागा जाना
जिसको देना ही होगा अपनी पहचान के लिए

सन्देह होता है
उस सुबह पर
जब नही होता कोई खडा।
और दिन गुजरने लगता है
उस दिन बिना बचाव के
निकलता हू बाहर
और सब कुछ नजर आता है
मेरे साथ।

यह छूट उसको है

यह छूट उसको है
किसी भी समय आये
बैठ जाये
मैं उसकी अगुवानी करू
मुस्कराहट को देखकर
अपने को गुनाहगार मानू
बिना कुछ कहे।

मत पूछो तुम्हारे पास क्या है

मत पूछो तुम्हारे पास क्या है

मत पूछो मेरे पास क्या है
कुछ तो है
दोनो के पास
हमको रख कर अपने हथियार पीठ के पीछे
दिखाना है हाथ जोड कर
बिना जताये
अपनी ताकत।

आओ
मत पूछो
हम क्या सोचते है, रचते है
अपने घरो मे बैठ कर
एक दूसरे के खिलाफ
जो चाहते है।

हम नाराज नहीं होते

हम नाराज नही होते
यू ही पडे रहते हैं
शोर
यू ही टकरा कर पत्थरो से
लौट जाता है चुपचाप
न जाग
न गुदगुदी

हम नाराज नही है

आकाश मे लटकते है स्वप्न
उन पर लटके रहते है
हम । लीन आवाज मे
हम नाराज नही होते
यू ही पडे रहते है ।

सोता

सोता
बहता है जमीन के नीचे
होता रहता है
दो पटरियो के
बीच का फैलाव
और बध जाती है
अथाह की सीमा।

सज्ञा ही सज्ञा
जन्मती
तैरती है
जानी अनजानी।

पहले तुम वीरान थे

पहले तुम वीरान थे
बियाबान थे
यह कहते नही
हो जाते हो
सूय के थक जाने के साथ
थमते थमते शोर
हलचल थमते थमते ।

हाथ बधा समय
जब बदलता है दिन तब
तुम्हारी सिराओ के कोलतार मे जडे पत्थर
उठ खडे होते है
बतियाने
सडक की रोशनी मे करने
अट्टहास
सुस्तानी कोशिकाओ के
बन्द दरवाजो पर।

मुख्य सडक का चौराहा
फुटपाथ की कमीज पहने
फैला देता है दो हाथ
कुछ दूर जाकर बन जाता है
दो राहा

भरता है मन

भरता है मन
जब तब
रिसती सीलन अंधेरे मे
आसमान की उमस
फैली होती रात भर
पास
दूर
छिटकी
बिखरी बूंद।

आस पास की सरकी मिट्टी
रहते
सहते
कोहरे
कुछ कोहरे होते रहते
सिमटे से
जब तब
भरता है मन।

पावो की थप-थप, छप-छप
फिर झुरमुट की खड-खड ने झाडे
कई, कई मानव के खोखल
फिर भी

वुत तो वुत
गति मे ताने पाव
रौंदे लम्बी परछाई
मचान की
झुक आई डाल के पत्तो की गदन।

फिर छूटे, छिटके छू गये हाथ
कोहनी से चिपके
जोहते बाट जो थे
खडे खडे
डहा कर फानूस
भोर की कोपल के साथ
चले तो, चले तो, चले
उस पार मचान के।

फैल जाता है

पेड
बाध कल मे
दूसरी
फिर दूसरी।

एक उगली ही तो
तना
छाये
प्रवाह कर जाये
सब मे
साथ|साथ।

नीम की दो छाया

नीम की दो छाया
थिर वातावरण
उमस
फैलती है छाया के बीच।

झुकी गर्दन
उलझी, गुथी जड़ें
फैली है चुपचाप।

छूटती आह टकराती
हिलता पत्ता
मिलते नयन
थिर पलकों पर उमस की नमी
चुपचाप।

पहचानी कड़वाहट की उमर में
हिली गर्दन
हिले दो-चार पत्ते
नयन जा पाव पर है थिर
बनात चित्र
पुराने से चुपचाप

गुमसुम

गुमसुम
झुकी
उन झाडियो मे
अकुरण के क्षण
थिरक-थिरक थिर थार होती है अचानक
और गड् मड् झाड सारे।

रह गया है शेप
पतझड पात भटका
कोई टूटा शब्द
शायद नाम होता।

एक चूजा

एक चूजा
आकाश की तरफ मुह बाये
लेता सास
आकाश की तलाश मे
धरती घोसला।
किलकारी है शेप
पख की
    अमराई ?
    अगडाई ?
और यह धरती पर आकाश !
चूजा
मुह बाये लेता सास।

वहो

वहो
पूरे वेग से वहकर
तराशो देह पर लहरे
छाट दो
जम गई छाप छाह की
रोम से रोम तक खुल जाये।

कण कण
उग आओ
एक चेतन देह से।

वहो फिर दोनो के बीच
स्वर हो जाये हम
तराशा
फैलता हुआ।

कैसी हवा हो

कैसी हवा हो
थपथपाकर जगाती हो
कपकपाती हो
हिलाती गिराती हो
हरापन पहन सारा
भाग जाती हो
मुझे सूखे रुख-सा करती।

पक्षी की छाया भागी

पक्षी की छाया भागी
हल्के हलके
तैरी सागर तल पर
पजो, पखो मे
खुला हुआ आकाश
उडता ऊपर ऊपर मौन
उसी को पक्षी कह दू।

रूख रूखे

रूख रूखे
धरती की खुश्की
आकाश के मुख पर लगा पलेथन
चातक सा
मीझर तावे
        बादल
अपना मुख खोले।

हर सुबह दरवाजे से

हर सुबह दरवाजे से
सरक आता है अन्दर
धीरे धीरे सिकुडती उगलिया
फेंक देती हे कोने मे
तहा देती है
अगली सुबह तक
एक ओर बोझ।

हो हवाए तेज

हो हवाए तेज
छील छाट आकार दे
हो जाये शिला के पार
बीच से
जडो तक काट कर दे
नोक भर टिक्ने ।

लौटने तक ठहरता हू

लौटने तक ठहरता हू
एक एक सामान
जी भर
देख टटोल कर रख देता हू
चाहत के क्रम से
जो रह जाता है पीछे
छूट नही जाता मुझसे
केवल होती है तैयारी
कमीज, कोट, पतलून
और हाथो मे वह रूमाल
जो छूता है चेहरा
होठ और आखे भरती हुई
जानी-सी गध

बार बार धुधली सी मिलती है

बार बार धुधली सी मिलती है
आख
बात
राह पर खोई-खोई रह जाती है।

साफ उभर आए आख
दिख जाये सब कुछ साफ-साफ
या फिर
सदा खोज का
हो जाये अन्त
क्यो यह किनारा
बार-बार झाई-सा।

मुझसे ही नहीं निकलता

मुझसे ही नही निकलता
मेरा अपना पाव
जो धसा है इस दलदल मे
वनता जाता है हर दिन
अपना ही वोझ ।

चारो तरफ खडी आशाए
इसलिए खुश हैं
कि मजबूती से पकडे हू जमीन
जमाये हू पाव ।
मुझे लगता है
इतने चाहने वालो के लिये
मुझ मे नही है आत्मा ।
मेरी आखो मे देखकर आत्मा का शून्य
वे समझते हैं
कि मैं लीन हू पाव जमाने मे ।

मैं हू कि
निकाल ही नही पाता
वचा पाव
धसे पाव से ।

उसने मेरी तहमद को तहा दिया

उसने मेरी तहमद को तहा दिया
बक्स से निकाल कर
पतलून को खूटी पर लटका दिया
कमीज से ढक दिया आधा उसे
साइकिल की चाबी
कलम, रूमाल और
मेज के पास चमकते जूते
अब वह है
लौट आने के इन्तजार में।

एक छाप

एक छाप
मिट नही पाती
एक छाप
बन नही पाती
भय के रहते।

वह औरत

वह औरत
जो उतरी है अभी गाडी से
छोड आई है
अपने दो माह के बच्चे को
अहकार से ऐंठे पति के पास।
शाम को लौटते-लौटते
ऐंठ जायेगी इसकी पिंडलिया
एक रुपया बचाने मे
थोडा बहुत साहस जो बचेगा
सीने मे
पहुचते ही घर
बच्चा चूस जायेगा
वह निहाल
लुढ जायेगी पति के पास
अगली सुबह
गाडी के इन्तजार मे।

उसकी मजबूरी है

उसकी मजबूरी है
जाल बुनना
धीरे-धीरे उसको बढाना
एक दिन
उसी मे उलझकर सर धुनना।
आत्मा से पूछते ही उसने
अपने पर कर लिया हमला
देर तक हिलाती रही जाल

मेरी आत्मा

(1)

अधेरे घर मे भटकती
दीवारो के छिद्रो से
फश पर क्चिकिचाती रेत का
कोई वना होगा आकार।

छिद्रो की रोशनी
और भटकाती रास्ता
और गहराता अधकार
दो सफेद धब्बो के बीच
कही छिपा है द्वार।

मेरी आत्मा
(3)

बचाते बचाते
एक दिन टकरा ही गई
जड़े कठोर पत्थर से।
बहुत फैली बाहे
भींच लेने पत्थर
एक दिन ठहरकर
हो गई जड

उससे फटती है
दीमकों की बाबी
डण्ठल की तरह
फर्श पर
किलबिलाते है जिसमें
अंधेरे के असख्य जीव

□□